भजन

मगरब से उग्या है सूरज,इमाम मेहंदी आए हुए हैं

बड़े भाग है दुनिया तुम्हारे,पूर्ण ब्रह्म यहां आए हुए हैं

1 अलफ–लाम और मीम के माएने, सब इन्हीं से तो अब खुल रहे हैं

गिर रही है मिश्री की इंटें, मुर्दे कब्रों से अब उठ रहे हैं

फिर ना कहना कि अनजान थे हम,वो बताने को आए हुए हैं

2 खुद बन कर आए हैं साहेब, और साथी है हमको बनाया

हम कौन कहां से हैं आए, अपना ठौर ठिकाना बताया

निराकार नहीं दुनिया वालों,अमरद सूरत वह पाए हुए हैं

2 नेति नेति कहां वेदों ने,और खोज खोज पचिहारे

बंध पड़े थे जो शास्त्र सुपन के,आके खोले हैं पूर्णब्रह्म ने

पूर्णब्रह्म ही तो है अल्लाह ताला,फर्क भाषा के आए हुए हैं

3 हर जगह पे लगा के शिविर में,मोमिनो को पिया है बुलाते

दे के वाणी अपने वतन की,नींद रूहों की आप उड़ाते

मेरे पिया की बैठक तो देखो, दिल को अर्श बनाए हुए हैं